

December '16							January '17						
M		5	12	19	26		30	2	9	16	23		
T		6	13	20	27		31	3	10	17	24		
W		7	14	21	28			4	11	18	25		
T	1	8	15	22	29			5	12	19	26		
F	2	9	16	23	30			6	13	20	27		
S	3	10	17	24	31			7	14	21	28		
S	4	11	18	25			1	8	15	22	29		

3/3/21

(1)

~~किसी~~

November 2016

316-050

Friday

11

Important

B. A. Part I

Hindi Notes

संस्कृत भाषा

हिन्दी काव्य

गाथावली

डॉ० अरुणा कुमार
मुख्य शिक्षक प्रौढ शिक्षण
हिन्दी विभाग
बनारस बनारस कॉलेज,
गढ़नाबाद

प्रश्न:- गाथावली के विद्यार्थी वर्गों की
विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर:- पदमावली गाथावली की मुख्य रचना
है। इसमें विद्यार्थी वर्गों की प्रधानता है।
गाथावली के पदमावली में गाथावली का
विद्यार्थी वर्गों हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी
वर्गों में सबसे उत्कृष्ट है।

गाथावली का विवरण- वर्गों
गाथावली में आधुनिक रूप में किया है। यह
विद्यार्थी वर्गों की आवश्यकता में वास्तविक,
कामिदाता आदि के गाथावली के समान
आपना विवरण-निर्देशन पत्र, पत्र, पत्र, पत्र
काव्य को कभी फिक्की है। गाथावली की निर्माण
का विवरण निर्देशन अन्य कविता के समान
अनुसंधान मात्र नहीं रह जाता। उन्होंने
जिस प्रकार संस्कृत के हृदय में पत्र-पत्रिका
के संस्कृतमूर्ति प्राप्त करने की सम्भावना
की है उसी प्रकार पत्र-पत्रिका के हृदय
में संस्कृतमूर्ति के संस्कार की भी।
गाथावली की दशा पर एक पत्र का दशा
आती है और वह उसके दुःख का कारण
बुद्धि के उसका संस्कार का जाने की है।
कविता:-

November 2016

12

317-049

Saturday

13.11.16
Hindi
Hons

3/3/21

जायकी कामशी

October '16

3	10	17	24
4	11	18	25
5	12	19	26
6	13	20	27
7	14	21	28
8	15	22	29
9	16	23	30

November

1	8	15	22	29
2	9	16	23	30
3	10	17	24	
4	11	18	25	
5	12	19	26	
6	13	20	27	

Important

हो जात है। जागमारी में उका पकती है।
जो संदेशों को लाए मान-गल की रहित,
बनने-मोड़ की लालावा की आलाप आलाप
नहीं, प्रेम-धर्मक कलें मरी बपत्नी है -
पदमावति को कहे है लिहंदा ॥
कंत लौभाई वही करि किंगम ॥
मोहि मोड़ को काजना, लावी,
नोह दिष्ट के लाहना-हावी ॥

मनदा आसित पौड -
पादा, पदा-पत्नी आदि को किना प्रकार उका
पुःवले में पुःवली और सरल में सरली होत है
जो को जायकी में लड़े हो को बाली कलें
काहदमा को दिवलाया है। जागमारी की विवहा-
बनने में लरवा को उनकी पुत्रलादी के जो
पौड-पादा सरल सुबुम्भार पौड को बलकीना
के पित्राव लोते ही ल विवला उते है -

पुत्राही जागमारी के लावी,
बनने पुत्रा पुत्रि पुत्रिवावी ॥
जायत पविल रहे काय पदे।
बनने पविल लोते जाहा है ॥

13

318-048

Sunday

जायकी द्वारा विवहा

कृशात का लवाणा आलुप्रिप्रा होत हुकती
उपहावनाकपद का होकर जंजीर होत है -
हाड मरु मरु किंगवी,
मारी मरु मरु मरु ॥
मोह मोह में लुगि उते,
कहीं विवा के दि मरु ॥

कामशी -